an>

Title: Issue related to supply of meat to animals in Uttar Pradesh Zoo.

श्री अधीर रंजन चौधरी (बहरामपुर) : मैडम, मैं सिर्फ दो शब्द बोलूंगा। जब भूखमरी की हालत होती है, तो एक कहावत कहा जाता है कि "ऊंट के मुंह में जीरा" और "हाथी के मुंह में इलाज"। मुझे लगता है कि अब इसके जगह नया शब्द का इस्तेमाल करना पड़ेगा, जैसे "शेर और बब्बर शेर के मुंह में पक्षी"। आज सुबह मुझे यह बहुत बुरा लगा, जब मैंने देखा कि उत्तर प्रदेश में बहुत सारे चिड़ियाघर हैं, जहां बब्बर शेर और शेरों को मांस नहीं दिया गया और उनको मीट के बदले चिकन दिया गया। इस दुनिया में जो हमारा इको–सिस्टम है, इसमें सबको बचना चाहिए; मैन, एनिमल और प्लांट सबको बचना चाहिए। अब हम लोग क्या कर रहे हैं कि कहीं पर मांस को बंद कर देते हैं...(व्यवधान) लेकिन हिन्दुस्तान की सरकार कहती है कि हम पिंक रिवोल्यूशन करेंगे।

हम हर साल 28 हजार करोड़ रुपये का मांस निर्यात करते हैं। शेर और बब्बर शेर को हम मांस नहीं देते हैं। कोई अगले दिन शेर और बब्बर शेर से यह न कहे कि तुम पालक- पनीर खाकर रहो। ...(व्यवधान)